संपादक के नोट

प्रभु की स्तुति हो। मैं आप सभी मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर अभिवादन करती हूं। प्रभु ने हमें बहुत से उपहार दिया है। सभी उपहार जो प्रभु ने हमें दिए है उनमे से, शांति सभी के लिए सबसे बड़ा उपहार है। सारे पैसे, योग्यता और प्रसिद्धि के बावजूद जो आपके पास है, अगर शांति नहीं है तो आपका जीवन दुखित है। आपके परिवारों में और आपके जीवन में, शांति आवश्यक है। यीशु कहते है लूका 10 : 5 ''जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो, कि इस घर पर कल्याण हो।'' हम एक व्यक्ति को कैसे नमस्कार करना चाहिए, 'शांति तुम्हारे साथ हो?' हम कह सकते हैं ''शांति आपके दीवारों और समृद्धि आपके महलों के भीतर हो।'' यशायाह 26 : 3 ''जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।'' शांति जो प्रभु हमें देता है हमारी सभी समझ के परे है। हमारा प्रभु शांति का प्रभु है। उसने अपने पैरों के नीचे शैतान को कुचल दिया है और हमें शांति दे दी है। रोमियो 16 : 20 ''शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।'' इससे पहले कि यीशु ने इस दुनिया को छोड़ा, उन्होंने कहा कि उनका शान्ति हमारे साथ दे दिया है। हमारे साथ उनकी शांति को दे दिया है जैसा दुनिया देता है वैसा नहीं। तो परेशान मत हो और डरो मत। यीशु मसीह के माध्यम से ऐसा हो की प्रभु की शांति आपके हृदय और मन की रक्षा करे। हमारे प्रभु यीशु यरूशलेम और इसराइल की ओर देख कर रोने लगे, क्योंकि वहाँ शांति नहीं था। लूका 19 : 41–42 ''जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया। और कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों

से छिप गई हैं।'' जब आप एक घर में प्रवेश करते है, उन्हें अभिवादन करके कहे, कि शांति तुम्हारे साथ हो। अगर गृहस्थी लायक है, तो आपका अभिवादन उनके साथ रहेगा; नहीं तो आपका अभिवादन आपके साथ वापस आ जाएगा। मत्ती 10 : 12–13 ''और घर में प्रवेश करते हुए उस को आशीष देना। यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुंचेगा परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा।'' यीशु उस जगह प्रवेश किया जहाँ उसके चेले इकट्ठे हुए थे और कहा, यूहन्ना 20 : 19 ''उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले।'' वही प्रभु अपने परिवारों में शांति बनाता है और बेहतरीन आशीर्वाद देता है। जब वह हमारे पापों को क्षमा करता है, बहुतायत की शांति हमारे दिल में भरता है। अपराध जो कि हमारी शांति को नष्ट करता है अपने आप में ही नष्ट हो जाएगा। सभी लोगों के साथ शांति को आगे बढाओ; और पवित्रता को, जिसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देख सकता। बाइबिल कहता है 1 पतरस 3 : 9 ''बुराई के बदले बुराई मत करा; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपरीत आशीष ही दोः क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो।'' आप उन्हें कैसे आशीर्वाद देंगे? कहकर ''धन्य हों तुम की शहर में हो और धन्य हों तुम की देश में हों। धन्य तुम्हारे शरीर के फल, अपनी जमीन की उपज और अपने झुंड की वृद्धि, अपने पशुओं की वृद्धि और तुम्हारे भेड़–बकरीयों की संताने। धन्य तुम्हारे अपने टोकरी और अपने सानना का कटोरा। धन्य हो तुम, जब तुम आते हों और धन्य हो तुम, जब तुम बाहर जाते हों।'' प्रभु तुम्हारे दुश्मनों को जो तुम्हारे खिलाफ बढ़ने के लिए उदय होता है तुम्हारे चेहरे के आगे पराजित होगा; वे एक तरह से आप के खिलाफ बाहर आएंगे और सात तरीकों में आप से पहले भागेंगे। प्रभु आदेश देगा की आपको और आपके अपने भंडारों में आशीर्वाद देगा और सभी में जो आप अपने हाथ को रखेंगे और वह उस देश में आशीर्वाद देगा जो आपका प्रभु परमेश्वर ने दिया है। जब आप एक घर में जाते है, उन्हें मुक्ति के तरिके सिखाना। यीशु के नाम के अलावा कोई अन्य नाम नहीं है जिसके माध्यम से हम मुक्ति प्राप्त कर सकते है।

यीशु आपको प्रेम से बुलाता हैं। यशायाह 45 : 22 ''हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहने वालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं है।''

हम सब हमारे जीवन में उनके प्यार, खुशी, शांति और समृद्धि प्राप्त करने के हमारे प्रभु यीशु के माध्यम से धन्य हो।

प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे जब तक हम इन पृष्ठों के माध्यम से फिर से मिले।

उसकी दाख की बारी में आपकी,

पास्टर सरोजा।

पवित्र बनो

1 थिस्सलुनीकियों 4 : 3 ''क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो; अर्थात व्यभिचार से बचे रहो।'' हालांकि हमारे प्रभु जानते है कि हम एक पापी दुनिया में रहते हैं, फिर भी वह हमारे जीवन को पवित्रता में जीने के लिए चाहते है। हमें पवित्रता और धार्मिकता में रहने के लिए हमें बुरी आदतों को त्यागना पड़ता है जो भी हमारे अंदर है। उदाहरण के लिए, एक शराबी को अपनी पीने की आदत को छोड़ना चाहिए। एक तंबाकू उपयोगकर्ता को तंबाकू चबाने की आदत को छोड़ना चाहिए। हाँ, हमारे प्रभु के लिए हमें अपने सभी दोष को त्यागना चाहिए और जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। क्यूं ? क्योंकि 'प्रभु का वचन और उनके लहू' ने हमें शुद्ध किया है, इस प्रकार हम अपने सभी दोष को पीछे छोड़ने के लिए सक्षम हुए हैं। हमें विश्वास है कि 'प्रभु का वचन और उनके लहू' हमें शुद्ध करने के लिए हमेशा रहेगा, तो क्या हमें पीते और तंबाकू चबाना जारी रहना चाहिए? तो क्या उनके वचन और उसका लहू हमें शुद्ध करेगा ? नहीं। हालांकि हम नियमित रूप से चर्च के लिए आते हैं, प्रभु का वचन हर शनिवार और रविवार सुनते हैं , यह हमें शुद्ध नहीं करेगा अगर हम अपने दोष के साथ जारी रहेंगे। याद रखें, प्रभु पापियों के रूप में हमें प्यार करता है, लेकिन हमारे पापों से नफरत करता है। एक बार, हम सब पापी थे, हम सब ने अलग अलग तरीकों से पाप किया है। हम सभ अंधेरे में थे, हम जीवन के तहखाने में थे। लेकिन, बाद में जब हम अपने प्रभु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते है, उसके लहू ने धोया और हमें शुद्ध किया है, हम ने उनके वचन को सुना है और उस में आगे बढ़े हैं। हम ने इस दुनिया में अपने दोष को पीछे छोड़ दिया है और उसके बच्चे के रूप में प्रभु उद्धारकर्ता के साथ आगे बढ़ गए हैं। यह केवल हमारा विश्वास ही है जो यीशु के लहू के और उनके वचन है कि हमें हमारे पापों से मुक्ति देता है और हमारे गंदगी और नीचपन से हमें शुद्ध करता है। हम हमेशा याद रखना चाहिए, कितने ही बड़े और गहरे हमारे पाप क्यों न हों, कोई डॉक्टर या हमारे रिश्तेदार हमारे पापों को ठीक नहीं कर सकता है, लेकिन यह केवल हमारे प्रभु परमेश्वर है जो हमें चंगाई दे सकता है और हमारे हर पाप से बचा जा सकता है। उनके वचन और सिर्फ उनका लहू हमें शुद्ध कर सकता हैं। हमारा परमेश्वर एक शुद्ध प्रभु है और हम उसके बच्चे हैं, इस प्रकार हमें भी उसके सामने शुद्ध होना चाहिए।

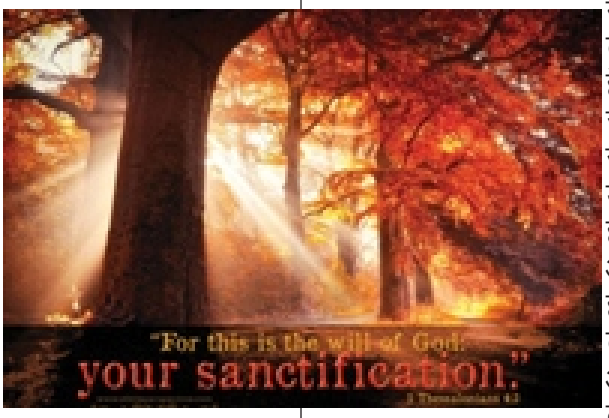

कई बार हम देखते हैं, हम क्या बात करते है, हम उसी के लिए जवाबदार होते हैं। नीतिवचन 21 : 23 ''जो अपने मुंह को वश में रखता है वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।'' हमें लगता है कि केवल पीना, तंबाकू चबाना, व्यभिचार करना कब्र की पाप कर रहे हैं। लेकिन वचन कहता है कि 'जो कोई भी उसके मुंह और जीभ को वश में रखता है, मुसीबत से उसकी आत्मा को बचाता है'। हमें हमारी जीभ को जांच और नियंत्रण में रखना चाहिए। जब इस्राएलियों को बंधन से बाहर लाया जा रहा था, जब वे जंगल में यात्रा कर रहे थे, वे न हीं शराब और न ही तंबाकू चबाया था, और न ही व्यभिचार किया था। लेकिन वे प्रभु परमेश्वर के खिलाफ गुरगुरावत करने लागे, लोग गुरगुरावत करते है और प्रभु के खिलाफ बात करते हैं। इस प्रकार उनमें से कई जंगल में अपने आप में नष्ट हो गए थे। आज भी, हमें विश्वास करना चाहिए कि इस बार हम जंगल में यात्रा कर रहे है इससे पहले कि हम वादा किए हुए देश सिय्योन तक पहुचे। इस प्रकार, हमें अपने मुह को नियंत्रण में करना चाहिए और अपनी जीभ को वश में करना चाहिए। यह हमारी आत्मा को नष्ट कर सकता हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए की, मैं धूम्रपान, पीने, तंबाकू चबाने व्यभिचार, नहीं कर रहा हूँ, तो मैं एक पापी नहीं हूँ। इस प्रकार, मैं धर्मी हूं सब जो मैं करता हूँ, लेकिन 'वचन' का कहना है कि हम अपनी जीभ और मुंह को नियंत्रण में रखना चाहिए, उसके बाद ही हमारी आत्मा का उद्धार होगा। याद रखें, कैसे परमेश्वर इस्राएलियों से प्यार करता था, वह दिन को बादल बनकर सूरज की गर्मी से बचाता था, और रात को आग के खम्भे से उन्हें बचाने के लिए उन्हें जंगल में प्रकाश प्रदान करता था। परमेश्वर के प्रेम और अद्भुत कामों को देखने के बावजूद, इस्राएलियों ने परमेश्वर के खिलाफ गुरगुरावट किया, उनके मुंह जांच में और जीभ को वश में नहीं किया। इस प्रकार वे गंभीर रूप से उनकी गुरगुरावट के लिए दंडित किए गए। आज भी, हम हमेशा उसकी छाया में रहने के लिए तरसते रहना चाहिए, वह हमारे लिए दिन को बादल और रात को आग का खंभा होगा। हमारे प्रभु की आँखें हमेशा हम पर हैं, दिन और रात उसकी दृष्टि हम पर है। वह हमारे हर अधर्म और हमारे हर गलत हरकत को भी देख सकता हैं। इसी तरह, उसके कान जो भी प्रभु के खिलाफ हमारे मुंह से बाहर आता है उसके लिए इच्छुक हैं। इस प्रकार हमारे प्रभु परमेश्वर कहते हैं, नीतिवचन 21 : 23 ''जो अपने मुह को वश में रखता है वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।'' हमें याद रखना चाहिए, अधर्म के लिए एक सीमा होती है, लेकिन धर्म के लिए कोई सीमा नहीं है। हम हमेशा शुद्ध और अधिक से अधिक शुद्ध अपने जीवन में बन सकते है। जबकि अधर्म की एक सीमा होती है, पवित्रता असीम है। एक जीवन पवित्रता में जीने के लिए आसान नहीं है, हम हमारे जीवन में बहुत सावधानी से नेतृत्व करना चाहिए। उदाहरण के लिए, सिमसोन की कहानी याद है, वह वेश्या के साथ व्यभिचार किया और इस तरह जीवन में अपने धर्म खो दिया है।

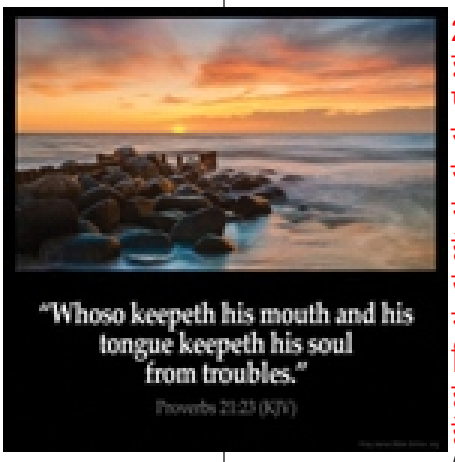

2 कुरिन्थियों 5 : 3–5 ''3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं। 4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। 5 और जिस ने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।'' प्रेरित पौलुस कहता है कि ''अपने परमेश्वर का वचन हर दिन सुनने से, उसके बाद ही हम धर्मी बन सकते है।'' क्योंकि वचन हमारे दिल में आर–पार लिखे जाने के लिए, हम बार–बार वचन पढ़ना चाहिए, बार–बार वचन सुनना चाहिए, जब तक की हमारे भीतर आदमी/महिला को पूरी तरह से बदल नहीं देता है। उदाहरण के लिए, अगर कोई सफेद रक्त कणों में या लाल रक्त कणों में एक कमी है, या अगर कोई खून में कुछ कारक की कमी है, डॉक्टर हमें इलाज करने के लिए एक कोर्स की सलाह देते है जिससे की वह नियमित हो सके। कभी कभी उपचार के इस पाठ्यक्रम को छह महीने या एक साल लग सकता है या डॉक्टर की सलाह के अनुसार हो सकता है की जीवन भर का उपचार की आवश्यकता हो। इसी तरह, वचन बार बार सुनने से, हर शनिवार और रविवार, साल के लिए, हमारी गहरी जड़ें पापों

से 'वचन' द्वारा चंगा हो जाएगा। यह एक चमत्कार नहीं है कि हम अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं और हमारे पाप खतम हो जाते है। हम यीशु के लहू से एक बार शुद्ध हुए है और हमारे पाप खतम हुए हैं। इसके अलावा, जब हम पानी में बपतिस्मा लेते है तो हम हमारे पापों से दूर हो जाएंगे लगता है। नहीं! हम रात भर में शुद्ध नहीं हो सकते है। यह केवल परमेश्वर का वचन बार–बार और फिर से साल भर में कभी कभी सुनते हो, उसके बाद ही हमारे भीतर आदमी/महिला अंत में बदल जाएंगे। यह तो है कि सच्चे परिवर्तन हमारे जीवन में आता है। इब्रानियों 11 : 14 ''जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रकट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं।'' हम देखते हैं इफिसुस की समूह में, वहाँ कई भेड़िये मेढ़ के कपड़ों में थे, जो कि चर्च में प्रवेश किए थे। प्रेरितों ने इन भेड़ियों को पहचान लिया। इफिसुस की कलीसिया के पास धैर्य की आत्मा थी, उनके पास महान ज्ञान और समझ थी, इस तरह वहाँ उन लोगों के बीच एकता थी। 1 कुरिन्थियों 13 : 7 ''वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।'' इस प्रकार प्रभु परमेश्वर ने इस कलीसिया की सराहना की है कि वे धैर्य से सब बातों को सहन करते है, सब बातों पर विश्वास करते है, सब बातों में आशा और वे सब कुछ भोगते है। हालांकि भेड़िये मेढ़ की कपड़ों में कलीसिया में प्रवेश किए थे, वे आसानी से हिदायत किए जा सकते थे क्योंकि इफिसुस की कलीसिया अलग थी और प्रभु के लिए बहुत ही विशेष थी। हम भी, कभी हमारे कलीसिया को हलके में नहीं लेना चाहिए। यह एक चुना हुआ पवित्र कलीसिया है। हम उनके चुने हुए लोग हैं। हम प्रभु के सामने सब एक हैं, प्रभु हम में से किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, वह हम सभी को इस कलीसिया में एक समान रूप से व्यवहार करता है। हमारे मन में किसी भी तरह का कोई संदेह नहीं होना चाहिए। जैसे की इफिसुस कलीसिया सब बातों को सहन कर सका, हम भी इस पवित्र कलीसिया के एक समूह के रूप में, यह सब बातें सहन करना चाहिए। जैसे की इफिसुस कलीसिया में यह गुण प्रचलित थे, उसी तरह के गुण हमारे प्रभु परमेश्वर हम में से हर एक में भी तलाश कर रहे है। याद रखें प्रभु ने इफिसुस की कलीसिया से प्यार किया, इसलिए वह हमारे कलीसिया से भी प्यार करता है। अतः हम दोषी ठरते हैं, हमें ताड़ना मिलती है, हमें परमेश्वर के वचन के माध्यम से परामर्श प्राप्त होती है हमारे इस पवित्र कलीसिया में, हमें हमारी भूल को सुधार कर उसे स्वीकार करना चाहिए और हमारे जीवन को बेहतर करने के लिए परिवर्तन करना चाहिए। हम में से किसी का भी जीवन परमेश्वर के सामने शुद्ध नहीं हैं, कि हम फिर से पाप कभी नहीं करेंगे, अधार्मिकता के कार्य करना, या किसी भी तरह से प्रभु को चोट पहुचाना। कई बार हम पाप करते है, हम प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करते है, हम प्रभु के साथ गलत करते हैं। लेकिन, जब प्रभु हमें हमारे पापों को, हमारे अवज्ञा को, हमारे गलत कामों को, दिखाता है तो हमें इसे योग्य रूप से स्वीकार करना चाहिए और हमारे जीवन को बेहतर करने के लिए बदलने की कोशिश करनी चाहिए। वरना प्रभु परमेश्वर कहते हैं, गुस्से में, इफिसुस की कलीसिया को ''अगर तुम पश्चाताप नहीं करते और पहला काम करते हो, तो फिर मैं जल्दी से आता हूँ और दीपक को अपनी जगह से निकाल दूंगा .... जब तक की तुम पश्चाताप नहीं करोगे''। हमारे प्रभु अपनी कलीसिया के खिलाफ या अपने प्रियजनों के खिलाफ कभी नहीं लड़ेंगे, वह हमारे साथ प्यार से बात करता है, परिणाम भुगतने की चेतावनी देता है, उसके बाद ही वह सजा/हमारा न्याया करता है। यह महत्वपूर्ण है की हम तुरंत प्रभु की चेतावनी पर ध्यान दे और पश्चाताप करे। हमारे घुटने पश्चाताप में हमारे प्रभु के सामने झुकना चाहिए। वरना उनका गुस्सा हम पर गिर पड़ेगा। जब ऐसा होता है, हमें प्रशंसा और हमारे पापों को दिखाने के लिए प्रभु का शुक्रिया अदा करना चाहिए। इससे पहले की हम शत्रु के हाथों में पड़े, परमेश्वर ने हमारे पापों को दिखाया। हमें इसके लिए प्रभु की प्रशंसा और शुक्रिया अदा करना चाहिए। हमें अपने आप को उनमे गिनती करना चाहिए जो

विशेषाधिकार प्राप्त हुए और अतिप्रिय हैं की तुरंत प्रभु की चेतावनी और ताड़ना मिली। प्रभु हमें क्यों सुधारता है? क्योंकि हम उसके पुत्र/बेटियाँ हैं। अगर प्रभु इफिसुस की कलीसिया से प्यार नहीं करता था, वे सुधार प्राप्त नहीं कर पाते और इस प्रकार उनका उद्धार हो गया। तो, हम अपने आप को उनमे गिनती करना चाहिए जो की उनके जीवन में प्रभु की ताड़ना पाकर आशीषित है। 1 पतरस 2 : 19–20 ''19 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है। 20 क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।'' हमें अपने प्रभु से प्यार करना चाहिए और अगर उनके लिए हम सताए जाते है, तो अपने खुद के लिए लाभदायक होगा। यह हमारी भलाई के लिए है, कि प्रभु ने हमें सुधारा है, वह हमें एक बेहतर इंसान बनाना चाहता है। यह आत्मविश्वास हमें उसके पुत्र/बेटियां बनाता है। इब्रानियों 12 : 7 ''तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लोः परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता?'' प्रभु हमें सजा देता है

क्योंकि उनका मानना है कि हम उनके बच्चे हैं। जैसे, अगर हमारे तीन बच्चे है, जिनमें से एक है जो की बहुत अच्छा बच्चा है और किसी भी झगड़े में शामिल नहीं है। लेकिन जब की अन्य दो शरारती बच्चों के बीच लड़ाई होती है, हम सभी तीनो बच्चों को सजा देते है उसे भी जो गैर शरारती है क्योंकि वह भाई है/या बहन वह दो जो लड़ रहे हैं उन्हें सही से नहीं सुधारा है, क्योंकि हम उन तीनों को समान रूप से प्यार करते है। इसी तरह, प्रभु हम सब को सुधारता है और हमें ताड़ना देता है क्योंकि वह हमें प्यार करता है। इस प्रकार हम सब को ताड़ना लेना चाहिए जो की प्रभु हमें आज दे रहा है, ताकि हम अपने आप को भविष्य में स्वर्गराज्य में प्रवेश करने के योग्य बन सके। यहोशू 3 : 5 '' फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।'' यहोशू ने लोगों से कहा आज खुद को पवित्र करे, क्योंकि प्रभु का चमत्कार कल होगा। लेकिन, सामान्य मनुष्य के रूप में, हम चमत्कार हमारे जीवन में पहले उम्मीद करते है और फिर हम कहते हैं कि हम अपने आप को पवित्र करेंगे। लेकिन यह परमेश्वर की व्यवस्था नहीं है। प्रभु का कानून है कि, हम अपने आप को आज और कल को पवित्र करे और कल हम प्रभु के चमत्कार को देखेंगे। किसे चमत्कार पसंद नहीं है? प्रभु के बच्चे और वह जो प्रभु पर विश्वास नहीं करते हैं उनके जीवन में चमत्कार देखना पसंद है। हम सब हमारे जीवन में प्रभु के चमत्कार के लिए इच्छा रखते है। कई बार, क्योंकि यह हमारे अपने पाप है कि हम अपने जीवन में प्रभु के चमत्कार का अनुभव नहीं कर सकते हैं। प्रभु ने कई बार, उनके पवित्र शास्त्र में कहा है, कि ''यह तुम्हारा पाप है, कि तुम्हारे और मेरे बीच एक पर्दा बनता है''। इसलिए यह महत्वपूर्ण है की हमें हमारे सभी पापों से वितरित किया जाना चाहिए, तो परमेश्वर की महिमा को देखने पाएंगे। जैसे यहोशू ने कहा है यहोशू 3 : 5 '' फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।'' ऐसे कई है जो सिर्फ विश्वास के प्रार्थना के द्वारा उनकी बीमारी से चंगाई पाए हैं, ऐसा नहीं है की वे परमेश्वर को जानते हैं या वे धर्मी हैं। लेकिन क्योंकि वे विश्वसनीय प्रार्थना योद्धा द्वारा पर प्रार्थना किए जा रहे है। हाँ, यह सच है, कि अविश्वासियों पे धार्मिक विश्वासियों प्रार्थना करते है, जिसका प्रार्थना प्रभु सुनता है और जवाब देता है। यह अविश्वासियों पर चंगाई लाता है। हम जानते हैं कि एक लकवाग्रस्त आदमी की कहानी उपचार के लिए यीशु के पास लाया जाता है। वह लकवाग्रस्त मनुष्य पापी था, लेकिन यीशु चार लोगों के विश्वास को जानता था, जो उसे लेके आए थे। इस

प्रकार यीशु ने तुरंत लकवाग्रस्त आदमी को चंगा किया। हम पढ़ते है मत्ती 9 : 2 और देखो, कुछ लोग एक लकवे के मारे हुए को खाट पर लिटा कर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस लकवे के रोगी से कहा, ''मेरे पुत्र, साहस रख, तेरे पाप क्षमा हुए।'' याद रखें, यदि हम महान विश्वास का जीवन जीते है, कई लोग हमारे विश्वास के माध्यम से बचाए जा सकते है। वैसे ही जैसे यीशु ने चार व्यक्तियों का विश्वास देखकर उस लकवाग्रस्त को प्रभु के पास आया था उठाया जो उपचार के लिए आया था। क्यों आदमी लकवाग्रस्त था? वह क्यों इतने सालों के लिए पीड़ित था? यह आदमी कौन था? यीशु ने उसके पिछली जिंदगी के बारे में जान्ने की जरुरत नहीं समझी। लेकिन यीशु ने चार पुरुषों का विश्वास देखा जो उसे उठाया और लाया। यीशु ने उनके विश्वास को देखा और उनके विश्वास को सम्मानित किया। फरीसियों जो वहाँ इकट्ठे हुए, यीशु की निंदा करना शुरू किया क्योंकि वे लकवाग्रस्त आदमी की पिछली जिंदगी के बारे में पता था। लेकिन कुछ भी यीशु को परेशान नहीं कर पाया, यह केवल चार लोगों के विश्वास की वजह से था, की यीशु ने लकवाग्रस्त को चंगा किया है। हमारा कलीसिया एक छोटा कलीसिया हो सकता है, लेकिन आज भी यीशु हर एक का विश्वास को देख रहा है और उसके अनुसार वह आशीष देगा। वह अदबुद कार्य कर सकता है हमारे जैसे एक छोटे कलीसिया के माध्यम से और चमत्कार कर सकता हैं। जैसे यीशु ने लकवाग्रस्त को जीवन दिया, वैसे ही वह हमारे माध्यम से चमत्कार कर सकते हैं, हमारा विश्वास उस पर है। इस प्रकार, जैसा कि हम ने पहले यहोशू में पढ़ा, यहोशू ने अपने लोगों से कहा ''अपने आप को आज, कल पवित्र करो और आप चमत्कार देखेंगे''। याद रखें अगर हम आज पवित्र किए गए हैं, कल प्रभु परमेश्वर हमारे माध्यम से महान चमत्कार कर सकते हैं। प्रभु के मंदिर में, हम सत्य, वचन, प्रभु का प्यार, खुशी और आनंद प्राप्त करते हैं।

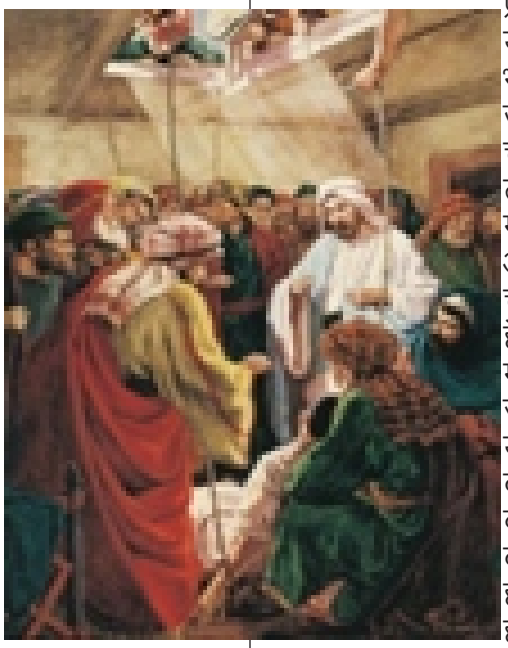

जो कोई भी प्रभु के पवित्र मंदिर में आते है, खाली हाथ कभी नहीं जाते। कोई भी भिखारी बना नहीं रहेगा। याद करे, कैसे एक लंगड़े लड़के के माता–पिता ने उसे मंदिर के द्वार पर भीख माँगने के लिए छोड़ दिया। क्यूं ? क्योंकि उसके भीख मांगने से पूरा परिवार बच गया। लोग जो मंदिर में आए थे, वे अमीर थे, वे अपने सोने और चांदी दान के रूप में देते थे। वे गरीब से प्यार करते थे, इसलिए भारी दान दे दी। उसी समय, पतरस और यूहन्ना ने भी मंदिर में प्रवेश किया। इस प्रकार यह हमें पता करना महत्वपूर्ण है, कि प्रभु के मंदिर के लिए जाना एक महत्वपूर्ण स्थान है, जो भी परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होता था मंदिर में प्रवेश करता था। इस प्रकार, जब पतरस और यूहन्ना ने लंगड़े लड़के को भीख मांगते हुए देखा तो, वे उसे कहते हैं कि ''सोना और चांदी हमारे पास नहीं है, लेकिन हम नासरत के यीशु मसीह के नाम से आते हैं। अतः वे उसे यीशु के नाम में चंगा करते है और उसे चलाते है। लंगड़ा लड़का कलीसिया में उछलके और परमेश्वर की स्तुति करते चला। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है की हम, प्रभु के मंदिर को सम्मानित करें, क्योंकि यह प्रभु का मंदिर है की अच्छे और महान बातें होती हैं। इस प्रकार हमें आज ही हमारे जीवन को पवित्र करना चाहिए, ताकि हम कल अपने आशीर्वाद को प्राप्त कर सके। हमारा प्रभु हमें प्यार करता है, वह हमें दया और अनुग्रह हर समय दिखाता है। यहाँ तक कि यहूदा जो उसे तीस चांदी के सिक्कों के लिए धोखा दिया, यीशु ने उसे भी अपना दोस्त कहा। इस प्रकार इफिसुस कलीसिया प्यार की एक कलीसिया थी, इस प्रकार जो भेड़िए मेढ़ के कपड़ों में आए थे रंगे हाथों तुरंत पकड़े गए थे। हमारा परमेश्वर न ऊंघता है न सोता है, याद रखें उसकी आँखें इस कलीसिया में हम पर हैं। यह एक मनुष्य द्वारा बनाया हुआ कलीसिया नहीं है बल्कि यह एक ऐसा कलीसिया है जो खुद परमेश्वर ने चुना है। यहां तक □□कि जब हम 'रोज ऑफ शेरोन चर्च'

बनाना चाहते थे, हम यहाँ और वहाँ एक बड़े कलीसिया के लिए भागते रहते थे। हमें पता चल गया था की अगर हम इस जगह को ले लिया तो हमें शत्रु की बातें और ठठोलियों के जीभ से सुनना पड़ेगा। उसी के डर से हम ने बाहर तलाश करना शुरू कर दिया। लेकिन हलाकि यह चुना हुआ जगह है, जैसे पवित्र शास्त्र में लिखा है, जहां शरीर होता है वहां उकाब ऊपर मंडराता है। हाँ, इस जगह में प्रभु का प्यार है और यह ऐसा प्यार है कि हम पर जीत हासिल किया है। प्रभु कहते हैं, स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे, लेकिन मेरे वचन भूमि पर कभी नहीं गिरेंगे। आज भी, प्रभु पास्टर को बदल सकते हैं, लेकिन वह हमेशा हमेशा के लिए इस जगह में राज करने के लिए जारी रहेगा। हमें उसके मन्दिर में होने के लिए योग्य होना चाहिए। कितने लोग इस पवित्र मंदिर से बाहर फेंक दिए गए है? जगह एक ही है, यह आगे बढ़ने और भी अधिक बढ़ने पर है। यहां तक □□कि जो कलीसिया को छोड़ चुके है जानते है 'सत्य' को, हर कोई सत्य को चख चूका है। जैसे शास्त्र कहता हैं, उसके दूसरे आगमन में जिन लोगों ने भी यीशु को क्रूस पर चढ़ाया वे भी सत्य को देखेंगे और उनका चिल्लाना होगा 'हमें छिपा .. हमें छिपा' , जो लोग हमारे कलीसिया को छोड़ चुकें है वे भी यही कहेंगे। वचन जो हमें यहाँ मिलता है, लोगों को खुश करने के लिए या उन्हें इस जगह में बने रहने के लिए नहीं दिया जाता है। दरअसल, यह सही कराता है, और इस सुधार के माध्यम से हमें आशीर्वाद मिलता है और हम धर्मी बन सकते है और प्रभु के लिए हम एक धधकती आग बन सकते है। इस प्रकार, हमें हर सुधार और दोषसिद्धि को वचन के माध्यम से प्राप्त करके स्वीकार करना चाहिए। यहां तक □□कि जब यीशु इस पृथ्वी के मुख पर चल रहे थे, 'यीशु जीवित वचन थे' वह गैर–यहूदियों को प्रचार किया और उन्हें वचन सिखाया। यह वही लोग हैं, जिन्होंने वचन सुना और बाद में प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया। हमारे प्रभु यीशु ने हमें पहले ही चेतावनी दी है की ''ये बातें मैं तुम से की है, कि मुझ में तुम शांति पाओगे''। दुनिया में तुमको क्लेश होगा, लेकिन आनंद मनाओ, मैंने दुनिया के ऊपर जय पाया है।'' यीशु ने यह नहीं कहा कि तुम शांति पाओगे, उन्होंने कहा कि उन्होंने जो मेरे साथ क्या किया था, वे भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करेंगे। लेकिन विश्वास रखों, मैंने इस दुनिया के ऊपर जय पाया है। वह अकेला ही हमारा आशा और विश्वास है। हमें उस पर विश्वास होना चाहिए। वरना हम अपने मुंह और जीभ से पाप करना जारी रखेंगे और इस तरह हमारी आत्मा नष्ट हो जाएगी। हम हमेशा भय और परमेश्वर के प्रेम में जीना चाहिए। गिनती 11 : 8 ''और लोगों से कह, कल के लिए अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही में भले थे। सो यहोवा तुम को मांस खाने को देगा, और तुम खाना।''

क्या परमेश्वर ने प्रेम के साथ इस मांस को दिया, नहीं वह क्रोध में इस मांस को दे दिया। क्योंकि इस्राएली जंगल में कुड़कुड़ाने लगे कि उन्हें मांस खाने के लिए चाहिए जैसे की वे मिस्र में खाया करते थे। क्या प्रभु हमारे लिए इतना मांस प्रदान कर सकते हैं? लोग शिकायत करने लगे और कहा कि यह बेहतर है की हम मिस्र में लौट जाएं और वहाँ खीरे खाने के लिए मिले। तो प्रभु उनके रोने और गुरगुरावत के कारण क्रोदित हुए। इस प्रकार इस मांस में ही भोजन करते समय, परमेश्वर का क्रोध उन पर आया और कई अपने मुंह में मांस के साथ कइयों की मृत्यु हो गई। इस प्रकार, याद रखें हमें प्रभु को कभी अपने मुंह और जीभ से क्रोध नहीं दिलाना चाहिए। प्रभु जानता है कि हमारे लिए क्या अच्छा है। जब हम अपने जीवन को उनके हाथ में सोप देते है तो, वह हमारे लिए सबसे श्रेष्ठ प्रदान करता है। प्रभु ने लोगों को शुद्ध मन्ना अर्थात स्वर्गदूत का भोजन प्रदान किया, यहां तक □□कि उनके पसीने की गंध भी महसूस नहीं हुई। कल्पना कीजिए, अगर आज हम वही मन्ना प्राप्त करें तो, हम कैसे खुश होंगे। हमें इसके लिए कड़ी मेहनत करनी

की कोई जरुरत नहीं, और न ही इसके लिए परिश्रम, और न ही इसके लिए संघर्ष करने की जरुरत हैं। हमें केवल परमेश्वर की उपासना और पूरे दिन भर प्रभु की स्तुति करनी है।

1 पतरस 3 : 11 ''वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उस के यत्न में रहे।''

जब तक की परमेश्वर जक्कई से मिले, उसने अपने जीवन में कुछ भी अच्छा नहीं किया था। वह एक चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था। लेकिन जिस समय उसने यीशु से मुलाकात की, वह बेहतर होने के लिए बदल गया, उसकी सारी बुराई और पाप के कर्मों को पीछे छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिया। प्रभु आज हम से यही चाहता है, वह हमें डुबाने में विश्वास नहीं करता, लेकिन वह हमें तैराकी सिखाने के लिए आया है, इसलिए कि हम जीवन में जीवित रहना सिख सके। याकूब लिखते हैं याकूब 3 : 13–18 ''13 तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रकट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। 14 पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। 15 यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। 16 इसलिए कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। 17 पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। 18 और मिलाप कराने वालों के लिए धार्मिकता का फल मेल–मिलाप के साथ बोया जाता है।'' जब प्रभु हमारे जीवन में आते है, इन सभी छोटे पापों से शुद्ध करके और हमारे जीवन से पाप को उखाड़ कर फेक देते हैं। इस प्रकार, कल प्रभु हमें उपयोग कर सकता है और हमारे जीवन के माध्यम से अति महान कार्य कर सकते हैं। हम प्रभु की कृपा में होना चाहिए और हम

इन बातों को हमारे जीवन के रास्ते में आने नहीं देना चाहिए। याद है वह गीत ''थिस लिटिल लाइट ऑफ माइन आईएम गोइंग तो लेट आईटी शाइन। लेट आईटी शाइन , लेट आईटी शाइन, आल थे टाइम।'' हाँ, हम परमेश्वर के प्रकाश को हमारे भीतर चमकने देना चाहिए और बाहर की दुनिया में हमारे माध्यम से चमकना चाहिए। दुनिया भी इस प्रकाश को देखना चाहिए। हम अपने जीवन में इस प्रकाश को छिपाना नहीं चाहिए। हमें दुनिया को रोशनी दिखाना चाहिए जैसे की जक्कई ने किया था, और प्रभु ने जक्कई के बारे में घोषणा की, कि आज से ''वह इब्राहीम के परिवार से है।'' हाँ, प्रभु के काम हमारे जीवन में किए जाने पर देखकर, प्रभु हमें अपने बेटे/बेटियां बनाता है। हमारी इच्छा यह होना चाहिए कि ''थोड़ा प्रकाश इस दुनिया में चमकना चाहिए''। दाऊद ने प्रार्थना की भजन संहिता 139 : 23–24 ''23 हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले! 24 और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!'' हमें भी दाऊद की तरह हर रात को प्रार्थना करनी चाहिए की, ''मुझे खोजो हे प्रभु और आज मेरे हृदय को जानो, मुझे प्रयास करो और अपने विचारों को जानो। मुझे जाचों की अगर मुझ में कोई बुरी तरीके हों, मुझे अनन्त के रास्ते में नेतृत्व करों''। प्रभु की कृपा से हर दिन हमारे जीवन में नया हो जाएगा। हम अकेले उनकी कृपा से सुदृढ़ किए जाएंगे। इस प्रकार हम हर दिन अपने पापों को उनके हाथों में दे देना चाहिए। अंत में हम स्वतंत्र महसूस करेंगे और हमारे जीवन में शांतिपूर्ण महसूस करेंगे।

प्रभु करे हम सब हर एक को आशीर्वाद मिले, वह एक अच्छा प्रभु है और प्रभु करे हम में से हर एक पर उसकी अच्छाई की बौछार होती रहे!

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोज।